पाठ 5. मैं सबसे छोटी होऊँ

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बालपन की स्मृतियों तथा माँ और बच्चे के मधुर संबंध को प्रकट करना है। बड़ा हो जाने पर भी बच्चा सदैव बच्चा ही बना रहना चाहता है ताकि वह अपनी माँ का वात्सल्य प्राप्त करता रहे। यह कविता इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति है।

कविता का सारांश

इस कविता में कवि अपने मन की बाल सुलभ इच्छाएँ प्रकट कर रहे हैं। वे बच्चा बनकर अपनी माँ से अपने मन की बातें व्यक्त कर रहे हैं। वे कह रहे हैं कि वे कभी भी बड़ा होना नहीं चाहते। सदैव अपनी माँ के आँचल की छाया में उनका स्नेह पाते रहना चाहते हैं। कवि को लगता है कि जब हम (बच्चे) बड़े हो जाते हैं तब माँ वह प्यार नहीं देतीं, जो वह उन्हें बचपन में देती थीं। बड़ा हो जाने पर माँ बच्चों को अपने हाथ से खाना नहीं खिलातीं, परियों की कहानियाँ सुनाकर नहीं सुलातीं। इसीलिए कवि बच्चा ही बने रहना चाहते हैं, जिससे उन्हें माँ का स्नेह मिलता रहे।

अध्यापन संकेत

पाठ पठन से पूर्व **पहले पहल** में पूछे गए प्रश्न पर बच्चों से चर्चा करें। कविता का सस्वर वाचन करें। पहले स्वयं कविता के प्रत्येक अंश का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें। फिर बच्चों से भी करवाएँ।

बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- बच्चों से उनकी माँ के बारे में चर्चा करें।
- उनकी माँ उनकी देखभाल किस तरह करती हैं?
- वे बड़ा होकर अपनी माँ के लिए क्या करना चाहेंगे?
- उन्हें समझाएँ कि माँ तुम्हारे लिए कितना कुछ करती हैं। तुम्हें भी उनका ध्यान रखना चाहिए।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।